International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182 Print ISSN: 2349-5979
www.allsubjectjournal.com
Volume 2; Issue 11; November 2015; Page No. 27-30

सेवासदन में नारी मनोविज्ञान

बबली

भारतीय भाषा केन्द्र जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली

शोध सार

सेवासदन' प्रेमचन्द का बहुचर्चित उपन्यास है। प्रेमचन्द पहले उर्दू में लिखते थे और बाद में हिन्दी में 'सेवासदन' उपन्यास पहले उर्दू में 'बाजारे हुस्न' के नाम से लिखा गया। तत्पश्चात् हिन्दी में उसका प्रकाशन सन् 1918 में हुआ। इसमें प्रेचन्द ने सामाजिक समस्याओं का निरूपण अत्यन्त यथार्थवादी ढंग से किया है। सेवासदन में नारी जीवन की अनेक समस्याओं को उठाया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि सेवासदन में नारी–जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को मनौवैज्ञानिक स्तर तक समझाया है। नारी के अदृश्य अनकही अर्न्तमन स्थिति को दृश्य व शब्द रूप में चित्रित किया है। इस उपन्यास की महती उपलब्धि है सहज मनोविज्ञान का आधारपूर्ण प्रयोग। प्रेमचन्द ने पात्रों के अर्न्तद्वन्द्व के चित्रण में अपने सहज मनोविज्ञान का आश्रय लिया है और अत्यन्त सफलतापूर्वक उसे निभाया है। सेवासदन में सामाजिक समस्याओं के आरोपित समाधान दिए जाने का प्रयास किया है। डॉ. इन्द्रनाथ मदान के अनुसार ''सेवासदन वह प्रथम यथार्थवादी और साहित्यिक उपन्यास था जिसने हिन्दी भाषा जनता में हचल मचा दी। हर व्यक्ति ने यह अनुभव किया कि साहित्य में एक नये नक्षत्र का उदय हुआ है।'' प्रेमचन्द का यह उपन्यास नारी मनोविज्ञान की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द सेवासदन, मनोविज्ञान, नारी–मनोविज्ञान, मनौविश्लेषण, स्थायी और अस्थायी भाव, फ्रायिडियन मनोविश्लेषण।

मुख्य शोध–पत्र

'सेवासदन' 1918 ई. में प्रकाशित उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द का दूसरा हिन्दी उपन्यास हिन्दी साहित्य में युग परिवर्तन करने वाला उपन्यास है। अब तक इसके लगभग 30 संस्करण हो चुके है जिससे इस उपन्यास की लोकप्रियता का पता चलता है।[1] साथ ही पुस्तकालय में मौजूद प्रेमचन्द के उपन्यासों के पन्नों का देखकर इसके पाठको की संख्या का भी अनुमान लगाया जा सकता है।

'सेवासदन' उपन्यास में अब तक वेश्या समाज, अनमेल विवाह अशिक्षा से उत्पन्न आर्थिक पराधीनता, पारिवारिक कलह, स्त्राी के चरित्र पर मिथ्या शंका, स्त्री पुरूष प्रेम आदि समस्याओं पर खूब लिखा जा चुका है। प्रेमचन्द की नारी–भावना सम्बन्धी दृष्टिकोण की खूब चर्चा हुई है लेकिन इस नारी भावना के पीछे छुपे दृष्टिकोण में प्रेमचन्द का नारी मनोविज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है। जिसे नजदीक से देखने में शायद कम ही लोगों ने कोशिश की हो। मनोविज्ञान की शुरूआत प्रेमचन्द की कहानियों से उपन्यासो से शुरू हो जाती है।

प्रेमचन्द की नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण के बारे में अक्सर कहा जाता है कि प्रेमचन्द नारी को छूट देते है लेकिन एक हद तक। जहाँ नारी थोड़ी आगे बढ़ी तो झट से उसकी डोर खींच लेते हैं। नारी को एक आदर्श पैमाने पर रखते है। इन सभी बातों से बढ़कर महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रेमचन्द नारी मन को कहा तक पकड़ पाते है और कितने सफल हुए है– उनकी महत्ता इस बात पर निर्भर करती है। प्रेमचन्द के 'सेवासदन' उपन्यास में सुमन, जाह्नवी, सुभद्रा, शान्ता, गंगाजली, भोली, भामा आदि स्त्री पात्रों की मनोदशा, मनोव्यथा, मनोभावना को बड़ी बारीकी से पकड़ा है। ऐसा लगता है प्रेमचन्द नारी मन को टोह आए हो।

'सेवासदन' की सुमन कभी विद्रोहिणी, कभी स्वार्थो, गर्वीली, कभी त्याग–ममता की छवि, कभी असहाय, कभी शक्तिशाली बन जाती है। सुभद्रा कभी नीरस कभी प्रेम भरी, शान्ता कभी शान्त, कभी इच्छाओं से भरी, जाह्नवी कभी लडाकु, कभी प्रेम ममतामयी, भोली कभी भली, कभी स्वार्थी, गंगाजली कभी हतोत्साहित, कभी उत्साह भरी। भामा कभी क्रोध, कभी क्षमा, ये सभी मनोभाव 'सेवासदन' के स्त्री पात्रों में उपस्थित और अनुपस्थित चलते रहते है। इसके पीछे छिपा नारी मनोविज्ञान ही है जो परिस्थितिवश उपजता रहता है। 'सेवासदन' के स्त्री पात्रों का अध्ययन करने के बाद उनका मनोविज्ञान उभर कर आता है।

साहित्य का आधार समाज है और मनोविज्ञान, का केन्द्र व्यक्ति संबंधी विवेचन है। समाज और व्यक्ति का आचरण सम्बन्धी तालमेल और सृजनात्मक द्वन्द्व ही मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन का केन्द्र बिन्दू होता है। 'सेवासदन' उपन्यास में नारी मनोविज्ञान पर चर्चा करने से पहले मनोविज्ञान को जान लेना आवश्यक है–

मानक हिन्दी कोश में, ''मनोविाान वह विज्ञान या शास्त्र है जिसमें मनुष्य के मन उसकी विभिन्न अवस्थाओं तथा क्रियाओं, उस पर पड़ने वाले प्रभावों आदि का अध्ययन तथा विवेचन होता है।''[2]

मनोविज्ञान की परिभाषा देते हुए डॉ. नगेन्द्र ने लिखा है, ''मनोविज्ञान के अंतर्गत मस्तिष्क की विविध क्रियाओं एवं शक्तियों का तथा मानव स्वभाव एवं कार्यो की मूल प्रवृत्तियों एवं प्रेरणाओं का अध्ययन किया जाता है।[3] मनोविज्ञान के माध्यम से व्यक्ति का अंतर्मन अभिव्यक्त होता है। मनुष्य के व्यक्तित्व में अंतर्वृत्तियों का प्रमुख स्थान है। समस्त बाह्य व्यापार इन्हीं प्रवृत्तियों की बाह्यभिव्यक्ति है। मनोविश्लेषण ने मानव अंतर्जगत में चेतन मन के साथ अचेतन मन की स्थिति को रूप दिया है। अचेतन की कल्पना फ्रायिडियन मनोविश्लेषण का मूल सिद्धांत है। व्यक्ति की इच्छा शक्ति बाह्यभिव्यक्ति न पाकर अंतर्मुखी हो जाती है और अचेतन में अक्षुण्ण रहकर कुंठाओं एवं अस्पष्ट स्वप्न चित्रों को जन्म देती है। व्यक्ति की कामेच्छाएं अचेतन के क्षेत्र में प्रवेश कर उनका मानसिक संतुलन नष्ट करके अराजकता फैला देती है।

प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य में उपरोक्त सिद्धांतों को कथा साहित्य में प्रस्तुत करने के लिए नारी जीवन को भी नवीन रूप में लिया। नारी के परंपरागत स्वरूप को त्यागकर नारी की मानसिक जटिलताओं का मनौवैज्ञानिक विश्लेषण परीक्षण एवं मूल्यांकन किये जाने लगे। इस मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में स्त्री पुरुष संबंधों की नयी व्याख्याएँ उभरकर आई। मनोविज्ञान ने आदर्श के स्थान पर यथार्थ को स्थापित

किया। व्यक्ति को उसकी संपूर्ण विकृतियों, विसंगतियों एवं मनोविकारों के साथ साहित्य में प्रस्तुत किये जाने लगा।

'सेवासदन' के स्त्री पात्रों की बात करे तो सर्वप्रथम सुमन के मनोविज्ञान की बात करेंगे क्योंकि यह 'सेवासदन' का केद्रीय पात्र है। सुमन बहुत गर्वोली है उसकी इच्छाएँ और आकांक्षाएँ बहुत ऊँची है। अपने पिता के घर में वह ठाठ से रहती है। कृष्णचन्द्र उसके पिता अपनी दोनों बेटी सुमन और शान्ता की सभी इच्छाए पूरी करते। सुमन जो चीज पसन्द कर लेती उसे लेती और शान्ता को जो मिलता वह उसे सहर्ष स्वीकार कर लेती। सुमन का यह चरित्र शुरू से लेकर आखिरी तक उतार चढ़ाव देखता है इसके पीछे छिपा नारी मनोविज्ञान ही है जो कभी दृढ़ और कभी द्वन्द्व भरा चलता रहता है। संघर्ष उसके जीवन में जीवनपर्यन्त चलता रहता है। पिता के घर रहते हुए सुमन के जीवन में ऐसा मोड़ आता है उसके पिता कृष्णचन्द्र रिश्वत के आरोप में जेल चले जाते है। इसके बाद सुमन के मामा उमानाथ एक दोहाजू वर ढूँढकर उसकी शादी कर देते है। सुमन बहुत सुंदर थी, गला सुरीला था लेकिन शादी के बाद उसकी इज्जत करना तो दूर उसके आत्मसम्मान को पग–पग पर ठुकराया जाता। 'सुमन की इच्छाएँ आकांक्षाएँ सब पर बहुत गहरी चोट पहुँचती है। ''सुमन का पति गजाधर पुरानी रीति के अनुसार घर से निकालने की धमकी देता है– ''चली जा मेरे घर से, रांड कोसती है।''[4]

सुमन ठहरी स्वाभिमाननी। सुमन न पैरो पड़ती है न गिड़गिड़ाती है उसके स्वर में भारत का नवजाग्रत नारीत्व उत्तर देता है– ''हाँ, यो कहो कि मुझे रखना नहीं चाहता मेरे सिर पर पाप क्यों लगाते हो? क्या तुम्ही मेरे अन्नदाता हो? जहाँ मजूरी करूँगी, वही पेट पाल लूंगी।''[5] सुमन का यहाँ नारी मनोविज्ञान ही है जो उसे दृढ़ बनाता है। सुमन ग्रह प्रबन्ध में कुशल नहीं है। वह बीस दिन में ही एक मास के लिए निर्धारित धन राशि को खर्च कर डालती है। इसमें सुमन का कोई दोष नहीं क्योंकि ''उसने ग्रहिणी बनने की नहीं इन्द्रियों के आनन्द भोग की शिक्षा पाई थी।''[6] समुन अपव्ययी है और उसका पति गजाधर कृपण व्यक्ति है। इसीलिए दोनों का स्वभाव परस्पर नहीं मिलता। सुमन अपने सौन्दर्य से अवश्य पति को आकर्षित करती है किन्तु उसकी ग्रह प्रबन्ध की अनभिज्ञता उसे सदैव खटकती रहती है। उनमें प्रायः कहा सुनी भी हो जाती है। गजाधर और सुमन के रिश्ते की पीछे गहरा मनोविज्ञान है जिससे दोनों के मन में एक दूसरे को लेकर खटक बनी रहती है। सुमन ठहरी बाल्यकाल से ही आरामचीजों की शौकीन। चंचल है और गजाधर ठहरा अनुभव से भरा व्यक्ति। उसकी उम्र सुमन से दोगुनी है दो विवाह किए। वह निपुण है गर्हस्थ जीवन में। अब यहा दोनों का उम्र का अन्तर और अनुभव का अन्तर जो दोनों की बनने नहीं देता। और बाद में अलगाव हो जाता है। सुमन सीधी नहीं वह बहुत चालाक है। वह स्वाभिमानी है। लेकिन उसमें सहन शक्ति का सर्वथा अभाव है। धन की प्यास तीव्र है जो उसे गजाधर के पास सन्तुष्टि नहीं मिल पाती। वह उसे सदन में खोजने की कोशिश करती है। दोनों की उम्र समान है। नवयौवन है। लेकिन विवाहित होने के कारण और गजाध्र के साथ ठोकर खाकर वह अब संभलकर चलना चाहती है लेकिन यहाँ भी मन का द्वन्द्व जोर पकड़ता है। जब वह दालमण्डी छोड़कर विधवाश्रम में रह रही होती है तो उसके मन में सदन को मिलने को लेकर द्वन्द्व चलता रहता है इसके पीछे नारी मनोदशा ही है जो लगाव महसूस करती है, ''सदन के आने का समय हुआ। सुमन आज उससे मिलने के लिए बहुत उत्कंठित थी। आज यह अन्तिम मिलाप होगा। आज यह प्रेमाभिनय समाप्त हो जाएगा। वह मोहिनी मूर्ति फिर देखने को न मिलेगी। उसके दर्शनों को नेत्र तरस–तरस रहेंगे। वह सरल प्रेम से भरी हुई मधुर बाते सुनने में न आएंगी। जीवन फिर प्रेमाविहीन ओर नीरस हो जाएगा। कलुषित सही पर यह प्रेम सच्चा था। भगवान! मुझे यह वियोग सहने की शक्ति दीजिए। नहीं, इस समय सदन न आये तो अच्छा है, उससे न मिलने में ही कल्याण है। कौन जाने उसके सामने मेरा संकल्प स्थिर रह सकेगा या नहीं। पर वह आ जाता तो एक बार दिल खोलकर उससे बाते कर लेती उसे इस कपट सागर में डूबने से बचाने की चेष्टा करती।''[7]

यह नारी मन ही है जो त्याग, प्रेम, चिन्ता सभी भावों के समावेश के साथ कभी–कभी गहरे द्वन्द्व में फंस जाता है। यहाँ नारी स्थिति का भी वर्णन है जो परिस्थितिवश उपजा है सुमन विधवाश्रम चली जाती है। वहाँ जाकर सेवा में जुट जाती है। इसके बाद पद्मसिंह और विटठलदास जैसे लोग आश्रम में उसे विदुषी की उपाधि दे देते है। सुमन समाज में अपना आदर सम्मान चाहती है। जीवन में उसे निःसारता भी अनुभव हो गयी। सुमन का वेश्या जीवन से जुड़ जाना भी उसके जीवन में कई संघर्ष के पहाड़ खड़े कर देता है। उसकी बहन शान्ता का रिश्ता सदन से होता है। और जब पता चलता है कि शान्ता सुमन की बहन है तो सदन के पिता मदनसिंह बारात उल्टी लौटा लाते है। इस कारण से सुमन और शान्ता बहुत टूट जाती है। सुमन सदन को फटकारती है उसकी मन का सारा इक्ट्ठा हुआ बवाल बाहर निकलता है। यह मनोविज्ञान ही है जब मानव मन किसी के प्रति ज्यादा भरा हुआ हो तो समय रहते फूट पड़ता है। गुस्सा से सुमन सदन से कहती है '' यह तुम्हारे अत्याचार का फल है, यह तुम्हारी करनी है तुम्हारे ही निर्दय हाथों ने इस फूल को यो मसला है। जिसके पैरों पर तुमने बरसो नाक रगड़ी है, जिसके तलुवे तुमने बरसो सहलाए है, जिसके कुटिल प्रेम में तुम महीनों मतवाले हुए रहते थे उस समय भी तो तुम अपने माँ बाप के आज्ञाकारी पुत्र थे या कोई और थे? उस समय भी तो तुम वही उच्च कुल के ब्राह्मण थे या कोई और थे?''[8] प्रेमचन्द्र नारी की मनोदशा का यथार्थ रूप में वर्णन करते है। प्रेमचन्द नारी के सम्मान की समस्या को पाठक के सामने बार–बार लाते है प्रेमचन्द ने नारी को उसकी महानता और दैवीय गुणों के कारण श्रेष्ठ माना है। वह सेवा और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति है तथा प्रेम ही उसके जीवन की प्रकृति है। उसका जीवनाधार प्रेम है और वह प्रेम के उच्चतम आदर्श आत्मसमर्पण, निःस्वार्थता, वासनाहीनता का पालन करने में अद्वितीय है। एक वाक्य में नारी सेवा, त्याग, आत्मसमर्पण, पवित्रता, स्नेह, वात्सल्य, संयम, विनय, क्षमा, धैर्य, सहिष्णुता, लज्जा, आत्माभिमान आदि सुन्दर और उदात्त भावों की साक्षात मूर्ति है।''[9] प्रेमचन्द को यह विदित था नारी में मान सामान्य सी बात है किन्तु जब स्त्री में इसी मान भावना का उदय हो जाता है तब वह दुराग्रह का रूप धारण करता हैं उस अवस्था में ऐसा मान अनुचित तथा अग्राह्य प्रतीत होता है क्योंकि सीमित मान जहाँ मनोविनोद के कारण ग्राह्य है, वहाँ असीमित मान उदण्डता के कारण ही अग्राह्य बन जाता है।''[10]

उमानाथ की पत्नी जाह्नवी इस मान का जीता जागता उदाहरण है। जाह्नवी के मन में गंगाजली और उनकी बेटियों के लिए प्रेम नहीं था। वह उमानाथ से भी उनके बारे में द्वेषपूर्ण बाते करती और उमानाथ भी ऊपरी मन से उसकी हाँ में हाँ मिला दिया करते। जाह्नवी की कटी जली बाते उमानाथ के साथ–साथ गंगाजली और शान्ता को भी भेदती थी। शान्ता की बात करे तो वह पहले बहुत शान्त स्वभाव की थी। पिता जो कुछ लाते उसे सहर्ष ले लेती थी लेकिन जैसे ही उसकी शादी सदन के साथ तय हुई तो वह मन ही मन इठलाने लगी और यह नारी स्वाभाविक गुण है जब उसकी शादी तय होती है तो वह वर को लेकर सपने बुनने लगती है और अपने कल्पना संसार में डूबने लगती है और जब इसका कल्पना संसार किसी कारण वश यथार्थ में नहीं बदल पाता तो वह बहुत दुःखी हो जाती है वह अन्त तक संभावना लगाए रहती है कि किसी भी तरह सब सही हो जाए और अपने वर के घर जाऊ क्योंकि उसकी कल्पना संसार में सदन बस चुका था। शान्ता की बारात जब वापस लौट आती है तो वह बहुत खिन्न होती है। उसे बैचेनी रहती है कि किसी भी तरह सब सही हो जाए ''शान्ता को अभी तक यह आशा थी कि कभी न कभी न कभी मैं पति के घर अवश्य जाऊँगी, कभी न कभी स्वामी के

चरणों में अवश्य ही आश्रय पाऊँगी पर आज अपने विवाह की या पुर्नविवाह की बाते सुनकर उसका अनुरक्त हृदय काँप उठा। उसने निःसंकोच होकर जान्हवी से विनय की कि मुझे पति के घर भेज दो। यही तक उसकी सामर्थ्य थी। इसके सिवा वह और क्या करती? पर जान्हवी की निर्दयतापूर्ण उपेक्षा देखकर उसका धैर्य हाथ से जाता रहा। मन की चंचलता बढ़ने लगी। रात को जब सब सो गए, तो उसने पदमसिंह को एक विनय पत्र लिखना शुरू किया। यह उसका अंतिम साधन था। इसके निष्फल होने पर उसने कर्त्तव्य का निश्चय कर लिया था।''[11]

शान्ता का यह प्रयास सफल हो जाता है। पद्मसिह उसे सुमन के पास ले आते हैं। वह अपनी मनोव्यथा सुमन से कहती है। नारी मनोविज्ञान में यह भी है कि जब दो स्त्री समान परिस्थितियों से हारी हो और वो जब मिले तो दोनों का आपस में बात कर संबल मिलता है। सुमन और शान्ता को मिलकर भी यह संबल मिला। वह और दृढ़ हो जाती है। सुमन सदन को फटकारती है और शान्ता घूंघट में मुँह छुपाए मान रखती है और सदन को लज्जित करती हुई उसके कर्त्तव्य का एहसास दिलाती है–शान्ता का मिलन जब सदन से होता है तो उसका वह कल्पना संसार अब भी आँखों को हकीकत दिखाने में बाधित करता है। यह मनुष्य की मनोग्रंथि है। जब वह किसी भी घटना के बारे में ज्यादा सोचता है तो उसी में डूबा रहता है उसे हकीकत की दुनिया पर बहुत देर से भरोसा होता है। शान्ता के सामने जब सदन आता है तो ''वह विस्मित नेत्रो से इधर–उधर ताक रही थी। मानो उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं है। वह चौंक कर उठ बैठी और सुमन की ओर ताकती हुई बोली क्यों, यही मेरा घर है न? हाँ–हाँ यही है। और वह कहाँ है मेरे स्वामी मेरे जीवन का आधार। उन्हें बुलाओं, आकर मुझे दर्शन दें, बहुत जलाया है, इस दाह को बुझाए में उनसे कुछ पूछूंगी। क्या नहीं आते? तो लो में ही चलती हूँ आज मेरी उनसे तकरार होगी नहीं, मैं उनसे तकरार न करूँगी, केवल यही कहूँगी कि अब मुझे छोड़कर कही मत जाओ।''[12]

शान्ता की ये बाते उसके अर्न्तमन की बाते है। वह सदन को लेकर बहुत गंभीर थी। वह अचेतन अवस्था में पहुँच जाती है। और बड़ी मुश्किलों बाद चेतन अवस्था में आ पाती है। शान्ता का यह प्रेम भाव इतना सर्तक हो जाता है कि वह सुमन को लेकर भी ईर्ष्या करने लगती है कि कही सुमन सदन को अपनी ओर आकर्षित न कर ले। इस ईर्ष्या भाव में वह सब कुछ भूल जाती है कि सुमन ने उसके लिए कितना कुछ नहीं किया। शान्ता सुमन को एक तरह से बोझ मानने लगती है। सुमन की उस मनोदशा का अंदाजा लगाया जा सकता है कि जिस बहन के लिए उसने इतना त्याग किया उसके घर नौकरानी की तरह काम किया, उसकी देखभाल की, ये सब बाते शान्ता प्रेम उत्साह में भूल गयी और सदन के प्रति असहज थी। शान्ता का यह मनोविज्ञान ही है जो बचपन में उसे शान्त और बाद में उसे इतना विद्रोही बना देता है कि वह अपनी बड़ी बहन समुन को भी फटकारती है। शान्ता मातृत्व सुख भी प्राप्त करती है। उसके पुत्र होने में भामा और मदनसिंह भी आते है जो पहले सदन के विवाह का विरोध करते थे। इसके पीछे भी मनोविज्ञान है कि जब कोई चीज परम्परा से हटकर हो तो पहले उसकी असहमति, फिर विरोध और बाद में मान्य हो जाती है। भामा भी अपने पुत्र–पौत्र प्रेम को न रोक पाई और शान्ता के पुत्र की छठ पूजा में आती है। 'सेवासदन' की सुभद्रा, पात्र के नारी मन को भी प्रेमचन्द ने बखूबी पकड़ा है उसका चरित्र निरन्तर परिपक्वता की तरफ बढ़ता हुआ दिखाई देता है। पदमसिंह उसे अपने से कमतर आंकता है। लेकिन समय समय पर वह अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देती हुई सबको चौकाती है। सुभद्रा बहुत अच्छे स्वभाव की स्त्री है। शर्मा जी उनके पति जब भी परेशान होते तो वह उन्हे सांत्वना देती और आशा बँधाती सुभद्रा सुमन के प्रति अपना प्रेम भाव भी दिखाती। सुभद्रा मातृत्व सुख से वंचित रह गयी तभी तो वह सदन के साथ मातृत्व का भाव महसूस न कर पाई। ऐसा नहीं है कि वह उसे नहीं चाहती बल्कि जब सदन घोड़े की मांग पद्मसिंह से करता है तो वह अपने पास इक्ट्ठा हुआ सारा धन पद्मसिंह को दे देती है। सुभद्रा सुमन के प्रति बहुत लगाव रखती है। जब सुमन सेवासदन आश्रम में जाती है। तो सुमन की खेरियत के लिए पद्मसिंह से साथ चलने को कहती है। पदमसिंह नहीं मानते तो वह स्वयं चली जाती है। सुभद्रा को सुमन से लगाव हो गया ''सुमन के प्रति उसके हृदय में भक्ति उत्पन्न हो गई थी। वह सुमन को इस नई अवस्था में देखना चाहती थी। उसको आश्चर्य होता था कि सुमन इतने नीचे गिरकर कैसे ऐसी विदुषी हो गई कि पत्रो में उसकी प्रशंसा छपती है। उसके जी में तो आया कि पण्डितजी को खूब आड़े हाथों ले पर साईस खड़ा था, इसलिए कुछ न बोल सकी। गाड़ी से उतरकर आश्रम में दाखिल हुई।''[13] सुभद्रा की बुद्धिमानी का एहसास जब पदमसिंह को होता है तो उनके मन में एक लहर उठती है जो बरसो से रूकी हुई थी।'' उन्हें आज ज्ञान हुआ कि स्त्री सन्तानहीन होकर भी पुरूष के लिए शान्ति, आनन्द का एक अविरल स्त्रोत है। सुभद्रा के प्रति उनके हृदय में एक नया प्रेम जाग्रत हो गया। एक लहर उठी, जिसने बरसो के जमे हुए मालिन्य को काटकर बहाँ दिया। उन्होंने विमल विशुद्ध भाव से उसे देखा। सुभद्रा इसका आशय समझ गई और उसका हृदय आनन्द से विह्ल गदगद हो गया।[14] मनोविज्ञान के माध्यम से व्यक्ति का अंतर्मन अभिव्यक्त होता है। सुभद्रा यहाँ पदमसिंह और पद्मसिंह सुभद्रा के मनोविज्ञान को समझ गया। सेवासदन की भोली वेश्या परिस्थितिवश इस धन्धे में आ गयी। उसके चाहने वाले चाहे कितने भी लेकिन एक नारी का मन झूठे सम्मान और इज्जत को नहीं पचा पाता है वह सुमन से कहती है– ''हम कोई भेड़–बकरी नहीं है कि माँ–बाप जिसके गले मढ़ दे, बस उसी के हो रहे। अगर अल्लाह को मंजूर होता कि तुम मुसीबते झेलो, तो तुम्हे परियो की सूरत क्यों देता? यह बेहूदा रिवाज यही के लोगों में है कि औरत को इतना जलील समझते है। नहीं तो और सब मूल्कों में औरत आजाद है। अपनी पसन्द से शादी करती है और जब उससे रास नहीं आती तो तलाक दे देती है लेकिन हम सब वही पुरानी लकीर पीटे चली जा रही है।[15]

भोलीबाई की व्यवस्था के प्रति इतना आक्रोश दिया है जिस कारण से वह इस वेश्या जीवन में लिप्त हुई। भोलीबाई चेतन है। जिसके कारण उसमें इस परिस्थिति से लड़ने की क्षमता है। सेवासदन की गंगाजली भी चतुर है। वह कृष्णचन्द्र को अच्छी तरह से जानती है कि वो कितने ईमानदार है रिश्वत नहीं ले सकते। कृष्णचन्द्र को जब पुलिस गिरफ्तार करने आती है तो गंगाजली अस्थिर सी और असहाय हो जाती है। वह पुलिस को रोकती है वह अपनी स्थिति को प्रतिकुल मानकर बहुत परेशान हो जाती है। दोनों हाथों से अपना सिर पीटती है। उसे अपनी अदूरदर्शिता पर ऐसा क्रोध आ रहा था कि धरती फट जाए और उसमें समा जाए। शोक और आत्मवेदना की एक लहर बादल से निकलने वाली धूप के सदृश उसके हृदय पर आती हुई मालूम हुई। इसके पीछे नारी मनोविज्ञान ही है जो अपने पति को जेल जाता देखकर और दो बिन व्याही लड़कियों की चिन्ता से इतनी विचलित हो जाती है। घृणा का भाव उत्पन्न होने लगता है और मन एक तरह से अचेतन अवस्था में पहुँच जाता है। 'सेवासदन' उपन्यास में विभिन्न नारी पात्रों की मनोदशा से उनके मनोविज्ञान का पता लगता है। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में भी मनोविज्ञान को बखूबी पकड़ा है। प्रेमचन्द जी ने कहा है, ''सबसे उत्तम कहानी वह होती है, जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो।''[16] 'सेवासदन' उपन्यास में नारी मन की विभिन्न गुत्थिया सुलझाने में प्रेमचन्द, सफल हुए है। प्रेमचन्द ने नारी के व्यक्ति स्वातंत्र्य, स्वाभिमान तथा मातृत्व जैसी जीवन मूल्यों को भी प्रधानता दी है। प्रेम, घृणा, पीड़ा को मनोवैज्ञानिक स्तर पर चित्रित किया है– 'सेवासदन' में परिवेशजन्य नारी मानसिकता का चित्रण हुआ है। इसमें नारी पात्र के अर्न्तद्वन्द्व, अचेतन मनस्थिति, ईगो–अहम कुंठा सभी भावों का चित्रण हुआ है।

पात्रों की असहायता का भी चित्रण हुआ है। प्रेमचन्द ने नारी मनोविज्ञान का सफल चित्रण किया है। उन्होंने अपने नारी चित्रण में किसी भी प्रकार की धार्मिक, सामाजिक, जातीय तथा राजनीतिक रूढ़िवादिता को स्वीकार नहीं किया। उन्हें न तो समस्त प्राचीन नारी भावनाओं में घृणा है। और न समस्त नवीन के प्रति कोई विशेष अत्यासक्ति ही। पुरातनता में जो कुछ शिव है सुन्दर है उससे उन्होंने आंखे बन्द करके ग्रहण किया। और आधुनिकता में जो कुछ सहज सत्य होने के कारण ग्राह्म है, उसे भी बिना वितर्क के स्वीकार कर एक ऐसा पुण्य स्तवक संवारा है। जिससे सभी नारी सुवासित हो सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. प्रेमचन्द प्रतिभा लेख मध्यवर्गीय उपन्यास, प्रथम संस्करण 1967, सम्पादक इन्द्रनाथ मदान पृ. 41
2. प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्य में सांस्कृति चेतना पृष्ठ सं. 1, नित्यानंद पटेल, वेदालंकार।
3. मानक हिंदी कोश, रामचन्द वर्मा, पृ. 293
4. डॉ. नगेन्द्र, मानविकी पारिभाषिक कोश, पृ. 219
5. प्रेमचन्द और उनका युग, डॉ. रामविलास शर्मा, पेज नं. 36
6. सेवासदन–प्रेमचन्द 1971 वर्तमान संस्करण पृ. सं. 36
7. वही, पृष्ठ सं. 17
8. वही, पृष्ठ सं. 97
9. वही पृष्ठ सं. 213
10. प्रेमचन्द का नारी–चित्रण–डॉ. गीतालाल पृष्ठ सं. 411
11. उपन्यासकार प्रेमचन्द समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृष्ठ सं. 183, 181
12. सेवासदन, प्रेमचन्द, पृष्ठ सं. 174
13. वही, पृ. सं. 214
14. वही, पृ. सं. 196
15. वही, पृ. सं. 42
16. प्रेमचन्द, कुछ विचार पृ. सं. 60